१७००० पुस्तको मफत ! !

उपलुं मथाळु वाचीने वाचको अजब थता हशो के आ १७००० पुस्तको मफत मळवानी वात शु खरी हशे ? प्रिय वाचको, एमा जराए शका लावशो नहिं. ए वात तद्दन खरीज छे ते तमे जाणता तो हशोज अने न जाणता हो, तो हु जणावु छु के सुरतथी हिंदी-गुजराती बन्ने समीलीत भाषामा प्रकट थता, आखा हिंदुस्तानमा जाणीता मासिक पत्र ' दिगंबर जैन'' पत्रना ग्राहकोने मात्र रु. १॥। ना वार्षिक लवाजममाज दरेक वर्षे लगभग १० पुस्तको तद्दन भेट (मफत) मळे छे (अने ते उपरात वीरनिर्वाण उत्सवनो आशरे १५०-२०० पानानो अने ५०-६० चित्रोवाळो पाच भाषाना लेखोथी भरपुर दळदार खास अक पण मफत मळे छे) जेथी ए पत्रना सातमां वर्ष (वीर सवत २४४०) ना लगभग १७०० ग्राहकोने कुल्ले १७००० पुस्तको मफत वेंचावानाज छे. केम वाचको, हवे तो तमारी खात्री थई केनी के उपलु मथाळुं खरुज छे, त्यारे हवे तमे ए लाभ मेळवता हो, तो बीजाने ए लाभ मेळववानी प्रेरणा करो अने तमे जो ए पत्र पारकानुं लावीने वाचता हो, तो जातेज ग्राहक थई जाओ.

मेनेजर, दिगंबर जैन-सुरत.

दिगंबर जैन ग्रंथमाला नं. ७३

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

श्री कुंदकुंदाचार्य चरित्र.

(इस्वी० सन पूर्वे ५०० वर्षनो जैनोनो संक्षिप्त इतिहास)

अनुवादक अने प्रकाशक,

मूलचंद किसनदास कापडिआ.

ऑ. संपादक, "दिगंबर जैन"-सुरत.

प्रथमावृत्ति. वीर संवत २४४० प्रति १०००

वडोदरानिवासी शा० गीरधरलाल नारणदास संघवी तरफथी तेमना स्वर्गवासी भाई जमनादासना स्मरणार्थे "दिगंबर जैन" पत्रना ग्राहकोने सातमा वर्षमां (प्रथम) भेट.

मूल्य रु. ०-३-०

प्रस्तावना.

લગભગ સાત વર્ષ ઉપર બાર્શી (સોલાપુર)નિવાસી જાણીતા જૈન ઇતિહાસ શોધક **શ્રીયુત તાત્યા નેમીનાથ પાંગલે** 'શ્રીમાન્ કુંદકુંદાચાર્યનું' જીવન ચરિત્ર' પુસ્તકરૂપે **મરાઠી** ભાષામાં પ્રગટ કર્યું હતુ, તેમાં જૈન ઇતિહાસને લગતી બાબતો અતી જાણવાલાયક હોવાથી અમોએ આ ચરિત્ર ' દિગમ્બર જૈન ' પત્રના પ્રથમ વર્ષમાં **ગુજરાતી** અનુવાદ કરીને પ્રગટ કર્યું હતુ, જે પ્રગટ થવાથી જૈન ઇતિહાસથી ગુજરાતના વાચકો કેટલીક રીતે જાણીતા થયા અને દિગમ્બરી મત પ્રથમનોજ અને કેટલો પ્રાચીન છે તે સર્વેને જાણવામા આવ્યુ. બાદ આ પુસ્તક ફરીને પુસ્તકરૂપે પ્રગટ કરવાની માગણી અનેક વખત અનેક ગ્રહસ્થો તરફથી થયા કરતી હતી, તેથી અમોએ તેજ લેખ એટલે આ "કુંદકુંદાચાર્ય ચરિત્ર" ગુજરાતી ભાષામા અને **બાળબોધ** લીપિમા પુસ્તકરૂપે પ્રગટ કર્યું છે, જે સર્વે વાચકને એક અચ્છી ઐતિહાસિક સામગ્રી પુરી પાડશેજ એમ આશા છે. વળી આ પુસ્તક સર્વેને સહેલાઇથી વિનામૂલ્યેજ મળી જાય, તે માટે **વડોદરા** નિવાસી શા કેશવલાલ જીવનદાસની પ્રેરણાથી ત્યાના **શા. ગીરધરલાલ નારણદાસ** (ગગાદાસ) સઘવી તરફથી તેમના **સ્વર્ગવાસી ભાઈ જમનાદાસના સ્મરણાર્થે** "દિગંબર જૈન" પત્રના ગ્રાહકોને સાતમાં વર્ષની પ્રથમ ભેટ તરીકે પ્રગટ કર્યું છે. અમો એજ ઇચ્છીએ છીએ કે આવીજ રીતે મૃત્યુના સ્મરણાર્થે શાસ્ત્રદાન માટે રકમો નીકળતી રહે અને તેનો લાભ "દિગમ્બર જૈન" ના વાચકોને હરહમેશ મળ્યાજ કરે તથાસ્તુ

વીર સં. ૨૪૪૦ — જૈન જાતિ સેવક

ફાગણ સુદ ૮. — મૂળચંદ કસનદાસ કાપડીઆ–સુરત

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

श्री कुंदकुंदाचार्य चरित्र.

(इ. स. पूर्वे पांचसो वर्षनो जैनोनो

संक्षिप्त इतिहास.)

मंगलं भगवान्वीरो मंगलं गौतमो गणी ।

मंगलं कुंदकुंदाद्यो जैनधर्मोस्तु मंगलम् ॥

भरतखंडना इतिहासमांथी इस्वीसन पूर्वे त्रण चार शतक पर्यंतनो काळ अथवा तेनी पछीना बे त्रण शतकपर्यंतनो काळ अमूल्य एवा विद्वान नररत्नोथी एकदम परिप्लुत हतो, एवुं इतिहास जोनाराओ तरतज समजी शकशे, कारण के ते काळे गौतम-बुद्ध जेवा महर्षि, चाणक्य जेवा राजकारस्थानी पुरुष, चंद्रगुप्त, अशोक, विक्रमादित्यादि सरखा दयाळु, धार्मिक अने शूर राजा हता अने कालिदास, भवभूति अने बाण सरखा उत्तम कवि अने ग्रंथकार उत्पन्न थईने पोताना उदात्त धर्मन-

त्वथी, राजनीतिथी अने कवित्व शक्तिथी पोताने स्वतः अजरामर करी गया छे; वळी विशेषे पोतानी सत्कृतिथी हिंदुस्ताननो ईतिहास सुद्धां अलंकृत करी गया छे. आ तेओनी सत्कृतनी मोटाई केवी रीते वर्णवी शकाय ? पण आ काळमां थई गयेला जैन लोकोना महान् महान् सत्पुरुषोना ईतिहासमांथी नाम निर्देश पण न रहे ते जैन लोकोने माटे केटली ववी दुर्दैवनी वात छे ? इसवीसन पूर्वे पाचसो छसो वर्षथी ते इसवीसन पछी सुमारे एक हजार वर्ष पर्यंतनो काळ जैनोनो घणो महत्वनो हतो. आम होवा छतां जैन विषये इतिहासमां घणुंज अज्ञान रह्युं छे ते मोटी आश्चर्यकारक वात छे तेमां शंका नथी.

जो जैनोनी व्यवसाय दृष्टिनो विचार कर्यो होय तो एटलुं तो समजाशे के आज तेओ आटला बधा अज्ञान छे तेनुं कारण बराबर छे, कारण के जैन लोकनो राज्यकारभारमां सार्वभौमना संबंधमां घणो थोडो हाथ हतो; किं बहुना हतोज नहि ए कहेवुं पण चाली शकशेज. ज्यारे संस्थानिकना संबंधमा जैन लोकोनुं प्राबल्य दक्षिणमा म्हैसूर, कर्नाटक अने उत्तरमां बंगाल, बहार, गुजरात, राजपुताना वगेरे प्रांतमां घणुं हतुं एम हालना इतिहास परथी तेमज तत्कालीन शिळा लेखोपरथी समजाय छे. पूर्वना म्हैसूरना महाराजाना चार प्रतापी वा भाग्यशाळी वंशज जैन-

धर्मी हता एवुं शिला लेखोपरथी समजाय छे, तेवीज रीते राज-पुताना, गुजरात-काठीयावाड भातमां जैनोनुं घणुं प्राबल्य हतुं एवुं इतिहासपरथी देखाय छे. आ राजाओए सार्वभौमत्व माटे अथवा राज्य माटे प्रयत्नो न कर्या होवाथी तेमना संबंधे कदाचित् इतिहासकारोथी अज्ञात रहेवायुं हशे ए एक कारण-एटले "जितो रागद्वेषादयोः येन स जिनः" अर्थात जैन लोक पोताना मनने जीतीने-काम क्रोधादि मनोविकार रिपुओने निर्बळ करनार त्यारे तेने (कदाचीत्) राज्यनो लोभ क्यांथी होय! होय तो तेओ पोतानुं राज्य दया अने न्यायथी पालन करीने वृद्धावस्थामां दीक्षा लईने पोताना पुत्रने राज्य आपता होत. आनां सारां उदाहरणो इसवीसन पछीना हजार वर्षमां मालम पडशे.

खंडेलपुरना राजा जिनसेन-जेणे महा पुराण रच्युं तेनुं, तेमज मंदसोर, पटना वगेरे स्थळोना राज्योनां आवांज उदाहरण मळी आवशे. आ कारणथी कदाचित् इतिहासकारोए तेओने अज्ञात रहेवा दीधा हशे; आ बीजुं कारण. सिवाय जैनोना अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामीना निर्वाणपद पाम्या पछी जैनना साम्राज्यनुं शरणुं कमी कमी थतुं गयुं तेमज इसवीसन पछी हजार वर्ष पछी तेओए स्वराज्य मेळववानी आशा

छोडी व्यापारी, धंधो तुरतने माटे ग्रहण कर्यो ते त्रीजुं कारण. आ त्रण कारणोथी इतिहासमा जैनोनुं घणु प्रावल्य हतुं, कारणके धर्म संबंधी चळवळ अने सुधारणा संबंधने लईने जैनोनो उपर लखेलो काळ घणोज महत्त्वनो हतो एवुं इतिहास परथी ठरे छे, ए सिवाय जैन संस्कृत वाङमय--साहित्य दृष्टिथी विचार करतां उपरोक्त काळ घणोज महत्वनो हतो एमा शंका नथी. आ कारणथी तो जैनोने इतिहासमां स्थळ आप्युं होत, तो घणुं सारुं हतुं ! !

अस्तु, उपर निर्दिष्ट करेला इसवी सन पूर्वे पांच छ शतकनो अथवा ते पछीना सुमारे एक हजार वर्षना काळमांना जैन धर्मीय महत्व पछी अनेक व्यक्तिओ थई गई. श्रीमहावीर स्वामी सरखा धर्मनुं पुनर्जीवन करनार; जंबुकुमार, जीवंधर, वगेरे सरखा पराक्रमी राजा, गौतम (गणधर–बुद्ध नहि), भद्रबाहु, कुंदकुंदाचार्य, उमास्वामी, समंतभद्र, जिनसेन, गुणभद्र, नेमिचंद्र, मानतुंग वगेरे सरखा अनेक उत्कृष्ट वाङमयना कर्ता, उपदेशक, धर्मग्लानि समये उत्तेजन देनार अथवा नि.स्वार्थ एवा पुरुषो उत्पन्न थई गया. आ मोटामोटा नररत्नोए संस्कृत वाङमयनो असंख्य रत्न भंडार धर्म ग्रंथोना रुपमां गुप्तपणे एटलो बधो मूक्यो छे के तेनुं परिशीलन करवाने आजेः–अनं-

तपारं किल शब्दशास्त्रं स्वल्पं तथायुर्बहवश्च विघ्नाः॥ आ श्लोकने अनुसरी–आटला मानवी प्राणीओनुं आयुष्य पुरुं थाय के नहि ते शंका रहे छे.

हवे साहसिक एवो प्रश्न उत्पन्न थाय छे के जो जैनोनो आटलो अमूल्य संस्कृत वाङ्मयरुपी रत्न भंडार छे, तो ते आ अद्यापि सर्वना निदर्शन माटे बहार केम आवतो नथी ? कालीदास, भवभूति, बाण, एना ग्रंथ लोकोनी पासे केम जोवामां आवे छे ? आनो आ उत्तर बस थशे के युनिवर्सिटिए उपरोक्त कर्तानां पुस्तको शिक्षण क्रममां नीम्या अने ते योगे सर्वने तेमनो रस चाखवाना समय मळ्यो एटले लोकोनी ते ग्रंथ विषये पूर्ण ओळख थई छे अने थाय छे. जो युनीवर्सिटी न होत तो ते ग्रंथोनी आजे नीकळती हजारो लाखो आवृति नीकळी होत के नहि ते जैनोना वाङ्मयात्मक ग्रंथो संबंधे जे थयुं छे, ते परथी समजी शकाशे. आ परथी समजाय छे के जे तरेहना, जे जातिना, अने जे मतना लोक होय ते प्रमाणे तेओ पोतानी ज्ञातिने, पोताना मतने, पोताना धर्मने अथवा पोताना वाङ्मयने आगळ लाववामां यत्न कर्या करे. आज पर्यंत आपणा जैन लोको पैकी युनीवर्सीटी मध्यमांथी पण यत्न करनारी व्यक्ति एक पण नहोती. वळी आपणा जैन

वाङमयनुं बळ आगळ कोण लावे छे ? पोतानां बाळकोनी अव नति अने पारकानी उन्नति करवी एटली निःस्पृहता बतावता जितस्वार्थ माता पिता कोई ठेकाणे पण कोइए जोया छे ? आ-वीज जैन वाङमयनी स्थिति छे। त्यारथी ते आज सुधी आपणे जैन लोकोनी उन्नतिनी खरी दिशा समजता नथी तेथी अथवा प्रस्तुत देश, काल, वर्तमान (क्षेत्र, काल, भाव) ने अनुसरी शुं करवुं जोइए ते आपणा लक्षमां (आपणी सामाजिक परि-स्थितिने लइने) आवतुं नथी तेथी आपणने खरो मार्ग मळ्यो नथी; पण आज पोतानी, पोताना समाजनी, पोताना धर्मनी अने पोताना देशनी उन्नति करनार जैनोए शुं करवुं जोइए, ते दिशा देर्शाववामां श्रेय रहेलुं छे एवुं आपणा देश बंधुना मनमां होवुं जोइए, पण तेओना मनमां आ संबंधी घणो थोडोज विचार होय छे. पोतानी रोटलीपर घी नांखो एटले 'घी चोपडां' एवी मोटी बुमो पाडी तेओ बोले छे, तेथी तेवीज रीते बीजा पण पोतानुं मौन्य छोडी तेओनुं अनुकरण करे. पण आनी थोडी घणी पण दाद लागशे। तेनी स्थितिनुं आपणे अनुकरण करवुं जोइए; अने आजना निःस्पृही अने दयालु अंग्रेज सरकारनुं राज्य होवाथी अने तेमनी राजनीति अनुकरणीय होवाथी पूर्वना

काळमां जैन विषये रहेलो हस्तिना पीडयमानोऽपि न गच्छे-ज्जिनमंदिरम् ।। सापने जतो करवो पण जैनने "मारवो" आ जे एक पोकळ तिरस्कार केवळ जैनना संघनी शक्तिना अभावने लइने दीसतो हतो तेनो आज घणोखरो अटकाव थयेलो छे, अने जैनोनी खरी उन्नतिनी आ शतकमां शरुआत थइ छे एटले कहेवानुं तात्पर्य ए छे के प्रत्यवाय तो बीलकुल देखातोज नथी. केवळ द्वेष बुद्धिथीज जैनोना साहित्यने शुं पण जैनोने सुद्धां आपणा प्रेमाळ देशबंधु तरफथी अर्ध चंद्र मळ्यो हतो, पण हुं खात्रीथी कहुं छुं के आपणी दक्षिण महाराष्ट्र सभाए जे क्रम स्वीकार्यो छे, ते जो सर्व जैन संस्था स्वीकारशे, तोपरिणाममां सर्वेमांथी एकदम उन्नतिए पहोंचनार पहेला जैनज थशे. आथी सर्व लोकने(जापानी लोकने माटे हाल कहेवाय छे तेम)आश्चर्य थशे ! जैन वाङमयनां खरां मर्म अने महत्व जाणनारा पंडितो हाल जर्मनी सुद्धामां पड्या छे. कालिदास, भवभूति सरखा कवि शा माटे आगळ आवे छे ? अने हरिश्चंद्र (धर्मशर्माभ्युदय काव्यना कर्ता), वाग्भट्ट (नेमिनिर्वाण अने अलंकार शास्त्रना कर्ता), वीरनंदी [चंद्रप्रभ काव्यना कर्ता], वादिभसिंह(जीवंधर चम्पूना कर्ता), गुणभद्र [आत्मानुशासनना कर्ता], आवा अनेक जैन विद्वानो अप्रसिद्ध कां रहे ए समजवानो समय नजदीकज

आव्यो छे. ज्यां निःस्पृहताए खरेखर वास कर्यो छे त्यां कोइ वखते पण—

काळो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥ (भवभूति.)

आ उक्तिने अनुसरनार सत्यनोज विजय थया वगर रहेनार नथी. अस्तु, प्रस्तुत आ संबधे आटलुंज लखी हुं मुख्य विषय पर वळुं छुं.

आ उपर निर्दिष्ट करेला काळथी जैनेतरोने एटले जैन सिवाय अन्य लोकने अज्ञात रहेला अनेक पुरुष थइ गया, ए में जुदुंज कही दीधुं छे. ते काळमां जैन धर्मना विद्वान शिरोरत्न पट्टाचार्योमां आद्य भट्टारक श्रीमान १००८ श्री कुंदकुंद आचार्य दिगंबर मुनि—जेणे, जैनोना बे पंथना दिगम्बर अने श्वेताम्बरमां प्रथम उत्पत्ति दिगम्बरोनी थइ अने पछी श्वेतांबर उत्पन्न थया, ए वात ते काळनी समाजने दर्शावी आपी हती अने ते काळे समाजनी महान् सुधारणा करी हती तेओ थइ गया, तेमनुं संक्षिप्त चारित्र आज भारतवासी सर्व बांधवोनी समक्ष सादर रजु करुं छुं. ते चरित लखवा पहेला जैनोना अंतिम तीर्थंकर श्री महावीर स्वामीना निर्वाणकाळथी ते श्री कुंदकुंदाचार्यनी उत्पत्ति थइ ते पर्यंतनी थोडी ऐतिहासिक मा-

हीति क्रमेक्रमे आपवी उपयोगी थइ पडशे एवुं धारी ते माहीति क्रमे आगळ दाखल करुं छुं.

श्री कुंदकुंदाचार्यनुं नाम नहि जाणनार एवो एक पण मनुष्य जैनोमांथी मळवो मुश्केल छे. इस्वीसन् पूर्वे ५२६ मा वर्षमां श्री महावीरस्वामी तीर्थंकर मोक्षे गया, ते समये बौद्धोनो प्रसिद्ध राजा बिंबिसार जे जैनपुराणमां श्रेणिक राजा ए नामथी प्रसिद्ध छे ते थइ गयो. ए प्रथम कट्टो बौद्धधर्मी हतो, तेने बे स्त्रियो हती; एक जैनधर्मी 'चेलनादेवी' अने बीजी बौद्धधर्मी 'बुद्धमती'. ते समये जैन अने बौद्ध धर्मोने घणुं वैषम्य हतुं तेम बौद्धमती राणी श्रेणिकराजाने जैनधर्म विरुद्ध कहेती हती. राजा पण काइ अविद्वान नहोता. तेणे बुद्धमती राणीना गुरुनी अने चेलनादेवीना गुरु दिगम्बर मुनिनी स्वतः परीक्षा करी. परीक्षाने अंते सुवर्ण हतुं ते सुवर्ण ठर्युं अने पीतळ ते पीतळ ठर्युं. बौद्ध गुरुनी परीक्षा कर्या पछी ते केवळ दांभिक हतो तेम जणायुं, पण ज्यारे जैन दिगम्बर मुनिनी परीक्षा करवाने वनमा गयो के तरतज चेलनादेवीए कह्युं हतुं के जैनमुनि ए शांत परिणाममां होय छे, तेथी राजाए धार्युं के तेनी स्वत'कसोटीथी परीक्षा करवी ए योग्य छे, तेथी वनमां योग धारण करी ध्यानस्त थयेला दिगम्बर मुनिना गळामां एक पासे पडेला दुष्ट

काळा भयंकर सापने नाखी दीधो, पण आटलो भयंकर उपसर्ग मुनिने कर्यो छतां मुनि ध्यान विरत थया नहि; वळी ते राजा आ वृत्तांत कहवाने चेलनादेवी पासे गयो. तेणी आ जाणी व्याकुल चित्त थइ एकदम दोडती आवी, अने मुनिने नमस्कार करी पोताना पतिए करेला अपराध बदल आलोचना करवा लागी तेणीए त्या सर्पने जोयो, के तरतज तेणीना कोमळ हृदयनु विदारण थयु ते सर्पने लाखो कीडी जोईने मुनिने थता त्रास बदल तेणीने अत्यंत दुःख थयु, अने एकदम गळामाथी साप काढवा तत्पर थई, पण ते साप काढवाथी लाखो जीवनी [कीडीनी] हींसा थशे, तेथी तेणीए दूत पासेथी साकर मगावी एक बाजु वेरी के तरतज कीडीओ साकर उपर आवी साप उपरथी उतरी गइ अने पिपिलिका रहित सर्प एकलो गळामा रह्यो. पछी ते सर्प काढी नाख्यो अने मुनिए ध्यान विसर्जन कर्यु. पछी राजा श्रेणिकने पोताना कृतकर्म बदल पश्चाताप थयो अने जैनधर्मनी सत्यता भासवा लागी अने जैनधर्म ग्रहण कर्यो. पछी श्री महावीरस्वामीने तेणे असंख्य प्रश्न पूछी पोतानी शंकाओनु समाधान कर्यु. आ राजानी हैयातीमाज तेना एक पुत्रे जिनधर्मनी दीक्षा लीधी. आ राजा घणो न्यायी हतो. साराशंक आ बिंबिसार (श्रेणिक) राजा श्री महावीरस्वामी-

नो समकालिन हतो. आ राजा पछी तेनो पुत्र 'कुनिक' के जे गादीपर बेठो ते बौद्ध हतो. तेणे पोताना बापने केदमां नांख्यो हतो. आ वंशमाथी पछी गादीपर नंदराजा, चंद्रगुप्त, अशोक, बेठा हता. आ राजानी राजधानी पटणा (पाटलीपुत्र) हती.

श्री महावीरस्वामीना समयमां गौतम (गणधर) थई गया, ते गौतमना संबंधमां घणो वाद रह्येलो छे. कोई तेने बौद्धधर्मना संस्थापक कहे छे, केटलाक तेने शाक्यमुनि ए नामथी ओळखावे छे, पण आनी माहीती जैनग्रंथोमांथी एवी मळे छे के ते महान विद्वान ब्राह्मण हता. तेमनुं नाम इंद्रभूति द्विज हतुं. तेमनुं अभिमान जोइने एक जणे तेमने निचला श्लोकनो अर्थ पुछ्यो हतोः—

त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं नवपदसहितं जीव षट्कायलेश्याः ।
पंचान्ये चास्तिकाया व्रतसमितिगति ज्ञानचारित्रभेदाः ॥
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्त मर्हद्भिरीशैः ।
प्रत्येति श्रद्धधाति स्पृशति च मतिमान् यः स वै शुद्धदृष्टिः ॥१॥

आ श्लोकपर पुष्कळ प्रयत्न कर्यो, पण अर्थ समजवामां तेनुं कंई चाल्युं नही; त्यारे तेणे पोतानुं मान छोडी श्लोक

विचारवा माटे "तारो गुरु बताव" एम सामाने कह्युं, तेथी ते माणस ते विद्वान् पण मानी द्विजने श्रीमहावीरस्वामी समक्ष लई गयो. ते द्विज वीतरागमुद्रा जोईने गतमान थई गया अने जैनधर्मनी पूर्ण माहीती मेळवी जैनी बन्या. तरतज तेओए श्री महावीरस्वामीना समोशरणमांनी बार सभामा मुख्य व्याख्यातानी पदवी मेळवी, पछी तेणे ते सभामां राजा श्रेणिकने तथा अनेक जीवोने तीर्थंकरनी वाणीनो धर्मोपदेश कर्यो. महावीरस्वामी निर्वाण पद पाम्या पछी केटलांक वर्ष भरतखडमा फरी धर्मोपदेश करी १२ वर्ष पछी गौतमस्वामीए निर्वाणपद प्राप्त कर्युं.

आ पछी सुधर्मास्वामीए तेवीज रीते धर्मोपदेश कर्यो. आ पछी जंबूस्वामीए तेज कर्तव्य स्वीकार्युं. तेमनुं शरीर अति सुंदर हतुं. तेमणे केटलाक दिवस राज्य कर्या पछी दीक्षा लई ३८ वर्षो धर्मोपदेशना काममां गाळ्या. महावीरस्वामी पछी ६२ वर्षमां थई गयेला गौतम, सुधर्मा अने जंबूस्वामीने केवली कहे छे, त्यार पछी विष्णुकुमार, नन्दिमित्र, अपराजीत, गोवर्धन अने भद्रबाहु ए पाच विख्यात मुनि थई गया. आने श्रुतकेवळी कहे छे. आ पांच, १०० वर्षमां थई गया एटले श्री महावीरस्वामी पछी १६२ वर्षमां थइ गया. अर्थात् इ. स. पूर्वे ३६४ वर्षमां थइ गया. भद्रबाहुना समयमां चंद्रगुप्त राजा थइ गया.

जैन ग्रंथमां वे चंद्रगुप्तनुं वर्णन छे, ते वंने संबंधी उल्लेख क्रमें क्रमे करवामा आवशे. आ उपरथी वे चंद्रगुप्त जुदाजुदा थई गया होवा जोईए एवुं अनुमान नीकळे छे, पण ते नक्की करवाने माटे बीजां प्रमाणो जोईए.

पूर्वे पाटलीपुत्र (पटणा)मा 'नंद' ए नामनो राजा राज्य करतो हतो तेने शकट, नंद, सवंधु अने काची ए नामना चार मंत्री हता. तेओनी साथे राजा आनंदथी राज्य करतो हतो. एक वखत ते राजा पर शत्रुए सवारी करी. राजानी पुष्कळ सेना होय तोज आ प्रसंग लडवानो छे, तेथी राजाए 'शकट' मंत्रीनी सलाह पुछी, त्यारे शकटे राजाने कह्युं के—'हुं सैन्य पाछुं फेरवुं, पण मने जे गमे ते करवानी परवानगी आपो'. राजाने आ वात पसद पडी अने तरतज शकटे राजा पासेथी नीकळी कोशागार [तिजोरी]माथी पुष्कळ द्रव्य आपी तेनुं सैन्य पाछुं वाळ्युं. पछी एक दिवसे राजाए पोताना कोशागारनी तपास करी, तो द्रव्य थोडुं लाग्युं, त्यारे राजाए खजानचीने ते बाबत पुछतां तेणे सर्व हकीकत निवेदन करी. तेथी राजाने क्रोध आव्यो अने तेणे शकटने तेना छैयां छोकरां साथे केदमां नांख्यो, त्यां तेना कुटुंबनां सर्व माणसो दुःखी थई गतप्राण थया अने फक्त शकट एकलो रह्यो. पुनः ते नंद नृपपर शत्रुए

चढाइ करी, त्यारे ते राजाए शकटने बंध मुक्त करी तेनी सलाह पुछी, त्यारे शकटे "राजाने केद न करो, हुं सैन्यने पाछुं मोकलावु छुं" एवु कही पोते परसैन्यना सेनापतिने मळी नन्द तरफनी दहेशत तेना मनमा जगाडी अने नन्दनु सैन्यबळ बतावी ते सैन्यने पाछुं मोकलाव्युं, त्यारे राजाए पुनः तुष्ट थई सचिव--पद तेने आपवा माडयु. जवावमां शकटे कहुं के जे पदवीथी मारी कुटुंबीय मंडली मरण पामी, ते पदवीज मारे जोईए नहि. पछी ते पोते संतुष्ट थई राजानी पासेज रह्यो.

पछी ते एक वखत फरतो हतो, त्या रस्तामां एक चाणक्य नामना द्विजने दर्भ खणतो जोई तेने पुछ्युं--"उगेला दर्भने शा माटे खणे छे ?" त्यारे चाणक्ये उत्तर आप्यो के तेनुं कारण ए छे के मारे पगे वाग्युं तेथी हुं तेने खणु छुं, कारण के आपणने दु ख देनारने निर्वंश करवो तेज उचित् छे." आ वात शकटने गमी. जेणे आपणा कुटुंबनो नाश कर्यो ते नंद राजानोज निर्वंश करवो एवो घाट तेणे घड्यो. आ कार्य माटे तेणे चाणक्यने पोताने आश्रये राख्यो. पछी शकट अने चाणक्य बनेए परराजा तरफ गमन कर्युं अने ते राजाथी नंदनो पराभव कर्यो अने चाणक्ये लावेला चद्रगुप्तने नंदनी गादीपर बेसाडयो. आ प्रमाणे बोलेलां वचन खरां कर्यां अने पछी संसार-

मां कांई सार नथी एवु समजी शकटे जिनदीक्षा लीधी. पछी शास्त्र पठनमां पोतानो सर्वकाळ छेवट सुधी गाळ्यो. अही सुधी शकटनुं आ अल्प चरित्र. आ परथी एक तो शकट जैनी हतो एवुं ठरे छे, बीजुं शाकटायन व्याकरण नामनो जे ग्रंथ छे,तेनो कर्ता पण आज (शकट) हतो एवु अनुमान काढी शकाय छे. आ वात बे हजार वर्ष पूर्वेनी छे. त्यारे उपरना अनुमान बहुधा खराज छे एवुं लागे छे

शकटे, चाणक्ये आणेला चंद्रगुप्तने गादीपर बेसाडवाथी ते राज्य उत्तम रीतिथी चालवा लाग्युं ते जैनधर्मी हतो, एवो जैन ग्रंथमांथी उल्लेख मळी आवे छे आ प्रथम 'चंद्रगुप्त'. तेना पुत्र जे बंधुसागर तेणे पोताना पिता पछी राज्य चलावी छेवटे पोताना पुत्र 'अशोक' ने राज्य सोंपी पोते दीक्षा लीधी. आनो धर्म संबधी काइ स्पष्ट उल्लेख नथी अशोक सर्व कळामां निपुण हतो तेथी तेणे सर्व राजा अने शत्रुने जीती पुष्कळ देशो कब्जे कर्या. तेणे पोताना कुनाळ नामक पुत्रने विद्वान बनाववा माटे एक गुरु पासे मोकल्यो. ते गुरुए तेने नित्य शाल्योदन खवरावी अध कर्यो. पछी अशोक ज्यारे भूमंडळ फरी आव्यो त्यारे पुत्रनी स्थिति जोई तेने खेद थयो त्यारे तेणे पोताना पुत्रने एक सुदर राजकन्या साथे लग्न करावी आप्युं. पछी ते

उभयने चंद्रगुप्त नामनो पुत्र थयो. तेने राज्यारोहण करी अशोके दीक्षा लीधी अने चंद्रगुप्त राज्य करवा लाग्यो, आ बीजो चंद्रगुप्त.

आ चंद्रगुप्त जैनी हतो, ते संबंधी पूर्ण आधार छे. आना समयमा भद्रबाहु आचार्य विद्यमान हता. ते राजा जैन धर्ममां घणो निष्णात हतो. ते एक वेळा निद्रामां हतो त्यारे नीचे आपेला सोळ स्वप्न कही तेनी फलश्रुति पुछी. आ सोळ स्वप्नो खरेखर घणां मजेदार अने सांप्रत स्थितिने मळता आवे छे तेथी तेने फलश्रुतीसह अहीं नीचे लखु छु—

सोळ स्वप्नो अने तेनां फळो.

१. कल्पवृक्षनी डाळ तूटेली दीठी.

फळ—आ पंचम [कलि] कालमां घणाज थोडा लोको जिनदीक्षा लेशे.

२. सुर्यास्त थयेलो जोयो.

फळ—पंचम काळमां भद्रबाहू पछी पूर्ण अंगपूर्व ज्ञान धरावनार रहेशे नहि.

३. चंद्र चालीणी सरखो सछिद्र जोयो.

फल—जिनशासनमा अनेक भेद पडशे.

४. बार फेणवाळो सर्प जोयो.

फळ—बार वर्षनो दुष्काळ पडशे.

५. देवोनुं विमान उपर पाछुं जतां जोयुं.

फल—पंचम काळमा चारण मुनि विद्याधर आ भूमिमां आवशे नहि.

६. उकरडापर कमलोत्पत्ति.

फल—बहुधा वैश्य लोक मात्र जैनधर्म पाळशे. ब्राह्मण अने क्षत्रि अन्यमती थशे.

७. भुंतोनुं वृंद नाचतुं जोयुं.

फल—आ पंचमकाळमां मनुष्यो चंडी, मुंडी, भैरवादि नाना प्रकारना कुदेवोनी सेवामां रही अनेक जीवोनी हिंसा करशे.

८. आगीआने चमकतो जोयो.

फल—जैनधर्म सम्यक् सविस्तर रहेशे नहि अने मिथ्यात्वनो प्रचार थशे.

९. सरोवर बहुधा सूकुं हतुं तेमा एक बाजु थोडा पाणी जोयां.

फल—जे ठेकाणे जिन कल्याणिक थशे त्यां धर्मनी क्षीणता थशे.

१०. सोनानां पात्रमां कुतरां खीर खाता जोयां.

फल—उत्तम कुळमांथी लक्ष्मी नीचकुळमां रहेशे

११. वादरो हाथीपर बेठेलो जोयो.

फल—पंचम काळमां नीच लोक राज्य करशे. क्षत्रिय राजा काइ रहेशे नहि.

१२. समुद्रमर्यादानुं उल्लंघन जोयुं.

फल—पंचम काळमा राजा लोक अन्यायी अने नीति-भ्रष्ट थइ परवित्तनुं हरण करशे.

१३. महारथने नाना वाछरडा जोडेला दीठां.

फल—वृद्धावस्थामा दीक्षा पळाशे अने तरुणपणामां क्वचित् कोइ दीक्षा लेशे.

१४. राजपुत्र उंटपर बेठेलो जोयो.

फल—राजा लोक धर्म अने दया न करतां हिंसा करशे.

१५. रत्नराशीमां माटी मेळवेली जोइ.

फल—राजा लोक निर्ग्रंथ मुनिनो द्रोह करशे.

१६. बे काळा हाथी लडता जोया.

फल—ज्यां जोइए त्यां पर्जन्य (मेघ) पडशे नहि.

आ प्रमाणे स्वप्नोनी फलश्रुति जाणी राजा चंद्रगुप्तने अति दुःख थयुं अने उदास थयो. भद्रबाहु मुनीए पण हवे बार वर्षनो दुष्काळ पडशे एवुं जाणी पोताना शिष्यो साथे दक्षिण देशमा विहार करवा जवानुं ठराव्युं. चंद्रगुप्ते राजनी

भावी स्थिति भयप्रद थशे, एवुं जाणी भद्रबाहु मुनि पासे दीक्षा लीधी अने तेणे तेमनुं शिष्यत्व स्वीकारी तेमनी साथे रहेवा लाग्यो.

भद्रबाहु मुनीए पण पोताना १२ हजार शिष्यो साथे दक्षिणमां जवानुं ठराव्युं, पण ते स्वत. अवधिज्ञानी (अंतर्ज्ञानी) होवाथी पोतानो अंत थोडा वखतमांज थवानो छे एवुं जाणी पोताना 'विशाखा' नामक शिष्यने पट्टाचार्यनो अधिकार आप्यो, अने तेने दक्षिणमां रवाना करी पोते ध्यानस्थ रह्या, त्यारे चंद्रगुप्त पण बाकीना शिष्यो साथे दक्षिणमां न जतां गुरु पासेज रह्या. ते बार हजार पैकी रामाचार्य अने एक बे हजार आचार्यो पटणामां केटलाक श्रावकोए आ भयंकर दुष्काळमां संभाळ लेवानी विनति करवाथी पाटली पुत्रमां रह्या. आ विनंति भद्रबाहुना शिष्योने करी हती, पण तेओनी विनंति पर लक्ष न आपतां तेओ दक्षिणमां ठेठ गया.

बंगालामां सांभळेला भविष्य प्रमाणे जेम जेम दुष्काल पोतानुं उग्र स्वरुप प्रकट करवा लाग्यो, तेम तेम रामाचार्यादिकनी नित्य क्रिया डोलायमान थवा लागी, दुष्काळने लइने पटणामा रहेला आचार्योनी एवी भयभीत स्थिति थइ के एक दिवस त्यां एक मुनि आहार लेवा जतां ए भुखथी

पीडित एक मनुष्ये ते मुनिने जोइने तेनुं खून कीधुं अने मुनिनुं पेट फाडी तेमांथी अन्न भक्षण कर्युं. आ वात बाकी-नाओए रामाचार्यने कही, त्यारे तेणे रात्रीमां आहार लेवा जवुं एवुं ठराव्युं. पण पछी रात्रीए आहारे जता कुत्री भुंकवा लागी त्यारे तेणे आहारे जतां एकेक लाकडी लइ जवानुं ठराव्युं। पछी एकदा एक मुनि आहारे जता हता तेने एकदम एक गर्भवाळी स्त्रीए जोया. यतिनुं रुप जोइ ते स्त्रीनो एकाएक गर्भ पडी गयो, आ सर्व वृत्तात पुनः रामाचार्यने निवेदन करता तेणे वस्त्र अने पाघरण वापरवानुं ठराव्युं. आ प्रमाणे आ दिगंबरमांथी बीजी शाखा उत्पन्न थइ. आ शाखानुं नाम श्वेतांबरीनी शाखा. आ पछी वधतां वधतां बलाढ्य थइ. गुजरातमां बहुधा श्वेतांबरी मतनांज लोक जोवामां आवे छे. आवी श्वेतांबरीनी उत्पत्ति छे.

पछी दुष्काळ उतरी गया पछी दक्षिणमां गयेला विशाखाचार्य आदि दश अगीआर हजार शिष्य पाछा आव्या. दक्षिणमां जइने तेणे तीर्थयात्रा करी कर्णाटकमां गमन करी पोतानी वक्तृत्व शैलीथी सर्वने धर्मोपदेश दीधो अने जैन धर्मनो उत्तम रीतिथी प्रचार कर्यो, पछी आवीने 'रामाचार्य' ने मळ्या अने थयेला दोष तेमने दर्शावी कृत अपराध बदल प्रायश्चित्त

लीधुं, अने पूर्ववत् मुनि क्रिया प्रमाणे ते चालवा लाग्या. रामाचार्यने स्थूलाचार्य अने बीजा केटलाक शिष्यो हता. तेओ दुष्काळमां प्रचलित थयेली रीत वास्तविक धारी स्वेच्छाचारीपणे चालवा लाग्या, अने तेवोज पोताना शिष्योने उपदेश देवा लाग्या. आ श्वेतांबरीनो मूळ पायो. सारांश के, भद्रबाहूना समयमां आ नवीन श्वेतांबरी मतनी उत्पत्ति दिगंबरीमांथी थइ, एटलोज उल्लेख अहीं करवो बस छे.

वीरसंवत् १६२ थी ते ३४५ सुधीमां विशाखाचार्य, प्रोष्ठिलाचार्य, नक्षत्राचार्य, नागसेनाचार्य, जयसेनाचार्य, सिद्धार्थाचार्य, धृतिसेनाचार्य, विज्याचार्य, बुद्धिलिंगाचार्य, देवाचार्य अने धर्मसेनाचार्य एवा अगीयार आचार्य भद्रबाहूना पट्टपर क्रमे क्रमे बेसता गया. आ आचार्य ११ *अंग अने दश पूर्व ज्ञानना धारक हता. आ इसवीसन पूर्वे ३६४ वर्षथी ते १८१ वर्ष सुधीमा थइ गया, पछी तेओनी पछी ते पट्टपर अगीआर अंग पाठी आचार्य, नक्षत्राचार्य, जयपालाचार्य, पांडवाचार्य, ध्रुवसेनाचार्य, अने कंसाचार्य ए वीरसंवत् ३४५ थी ते ४६८ सुधीमां थइ गया. एटले इ० स० पूर्वी १८१ वर्षथी ते ५८ वर्ष सुधीमां उपरोक्त

* नोध—पूर्व अने अंग संबंधी उल्लेख आगळ कर्यो छे.

पांच आचार्य थइ गया. पछी एकदम मनुष्योनी बुद्धि कमी थवा लागवाथी पूर्वपाठी ज्ञाननो लोप थयो पण ११ अंग पैकीनुं ज्ञान कमी कमी थवा लाग्युं.

त्यार पछी ते पट्टपर:—

सुभद्राचार्य—१० अंगना धारक ६ वर्ष सुधी.
यशोभद्राचार्य—९ ,, ,, १८ ,, ,,
बीजा भद्रबाहूजी—
८ ,, ,, २३ ,, ,,
लोहाचार्य— ७ ,, ,, १५ ,, ,,
अर्हद्बली आचार्य—
१ ,, ,, २८ ,, ,,
माघनंदी आचार्य—,, ,, २१ ,, ,,
धरसेनाचार्य— ,, ,, १९ ,, ,,
पुष्पदंताचार्य— ,, ,, ३० ,, ,,
भूतबळी आचार्य—
,, ,, २० ,, ,,

आ सर्व आचार्यो क्रमे क्रमे थइ गया. ते वीरसंवत् ४६८ थी ते ६८३ सुधीमा थया; एटले इ० स० पूर्वे ५८ वर्षथी ते इ० स० १५७ सुधीमा उपरोक्त आचार्य थइ गया; एटले अंग

लोहाचार्यने ज्यारे पट्टपर ११ मुं वर्ष बेठुं, त्यारथी इसवीसन शरु थयो. तदुपरात बीजा भद्रबाहूनो समयमां विक्रम संवत् ४ हतो. आ संवत् विक्रम राजाना गादीपर बेसवाथी शरु थयो, आवुं ग्रंथपरथी जणाय छे.

विक्रमनो जन्म, ज्यारे सुभद्राचार्यने पट्टपर बेठां बे वर्ष थया त्यारे थयो, एवो उल्लेख छे. विक्रम राजाने बावीसमे वर्षे सिंहासन मळ्युं एवुं ठरे छे. विक्रम संवत्ना समय पछी इसवी सन ३८ वर्षथी शरु थयो, एवुं आ परथी ठरे छे, पण वास्तविक रीते आज विक्रम संवत् अने इसवी सन बेमा जे अंतर देखाय छे ते छप्पन वर्षनुं छे, त्यारे विक्रम संवत् जे आज प्रचलित छे ते तेना जन्मथी थयो हशे एवुं देखाय छे, कारण के सुभद्राचार्यने पट्टपर ४ अधिक वर्ष, यशोभद्राचार्यनां १८ वर्ष अधिक, बीजा भद्रबाहूना २३ वर्ष अने लोहाचार्यना ११ वर्ष मळी (४–१८–२३–११=५६) एम ५६ वर्ष बराबर मळी रहे छे. आ परथी विक्रम जन्मथी ते आजनो प्रचलित संवत् शरु थयो एवुं दीसे छे, पण आ संवत् छे एवुं ठरे छे, सारांश के वीर संवत्ना ४७० वर्ष पछी विक्रम संवत् शरु थयेलो छे, पण वीर संवत् विक्रमना जन्मथी चाल्यो होय तो ते बराबर छे. तेना राज्यथी किंवा अंतथी मान्यो होय, तो केटलांक वर्ष

तेमांथी वाद थवां जोइए, अने तेथी वीर संवत् ६२३ पाछळ जाय. वीर संवत्‌नो अद्यापि योग्य निर्णय थयो नथी. केटलाकनो मत (आधारथी) २५९६ वर्षनो अने केटलाकनो मत २४३२ वर्षनो पडे छे; तो आज पुष्कळ विद्वान गृहस्थो अने सन्माननीय जैन पत्रकारोए २४३२* लखेला छे—प्राप्य कर्या छे तेथी हुं पण ते ग्रहण करीने चाल्यो छुं;

जैन इतिहास.

ग्रथकारोए विक्रम संवत् ४ मध्ये थयेला बीजा भद्रबाहूने पट्टना पहेला अधिकारी कर्या छे एनुं कारण एवुं देखाय छे के संवत् शरु थयो त्यारथी आ पहेला स्थपाया एटले आम थयुं. आ पूर्वे थइ गयेला अने उपर वर्णवेला आचार्य केवळ क्रमे क्रमे धर्मोपदेश करी गया ते पूर्वाचार्योए पोताना पट्ट शिष्योने किंवा मुनिने संघना नायकने अधिकार आप्यो हशे एटलु ठरे छे. तेना अमुक एक ठेकाणे पट्ट (गादी) छे एवो कांइ स्पष्ट उल्लेख मळतो नथी. पट्टनी सर्व माहिती भद्रबाहुथी अने थोडी ' कुंद कुंद ' आचार्यथी मळी आवी छे ते पाछळ लखवामा आवशेज. भद्रबाहूनो पट्ट उज्जयिनिमां हतो.

---

* हाल तो २४४० मु वर्ष चाले छे, पण आ लेख अगाउनो लखायलो होवाथीज अने २४३२ लखेला छे.

पट्टाचार्यनुं बीजुं मान गुप्तगुप्ती आचार्यने आपेलुं छे अर्थात लोहाचार्य, अर्हद्बली आचार्य, माघनंदी, धनसेन, पुष्पदंताचार्य, भूतवळी आ सर्वने पट्ट साथे काइ संबंध न होवाथी तेनो विशेष उल्लेख कर्यो नथी. फक्त ते अंगज्ञानना धारक हता एटलुंज.

वीरसंवत् ४९२ मध्ये अने विक्रम संवत् ४ मा बीजा भद्रबाहु गादीपर (पट्ट पर) हता. २२ वर्ष सुधी पट्टारुढ रही तेणे वीर संवत ५१४ मां पोताना शिष्य गुप्तगुप्ती मुनिने पट्टाधिकार आप्यो अने पोते ध्यानस्थ थया. गुप्तगुप्ती मुनिए नव वर्ष पट्टाधिकार चलावी वीरसंवत् ५२३ मा ते पट्ट माघनंदी आचार्यने आप्यो ते समये श्वेतांबर पट्टनी स्थापना थइ त्यार पछी माघनंदी आचार्ये ४ वर्ष पट्ट चलावी वीर संवत् ५२७ मा एटले विक्रम संवत् ४० मां ते उपर पोताना मुख्य शिष्य 'जिनचंद्र' ने बेसाडी पोते ध्यानस्थ थया, ते समये इसवीसन् २ हतो. इसवीसन २ मध्ये जिनचंद्र आचार्य पट्टारुढ थया, ते आपणा चरित्र नायकना मुख्य गुरु अने तेमनु एकंदर आयुष्य ६५ वर्ष ९ महीना अने ९ दिवसनु हतु तेने फाल्गुन सुदि १४ ने दिने पोतानी वयना ५६ मा वर्षे गुरु माघनंदी आचार्य पासेथी गादी मळी. ते महा मनोनिग्रही हो-

वाथी सर्व शिष्य तेमनो संयम जोइने अतिशय नमता रहेता
हता. तेणे पोताना सर्व शिष्योने होंशीयार करी पोते पोतानी
अस्खलित वाणीथी सर्व प्राणी मात्रने धर्मोपदेश करता अने
पोतानी ६५ वर्षनी वये पोताना पट्टशिष्य कुंदकुंद आचार्यने
स्वतः पोताना—पट्ट उपर बेसाडी पोते वननो मार्ग स्वीकार्यो

आ पट्टशिष्य आपणा चरित्रना नायक छे. ते तरफ
हवे आपणे वळीए. वांचक वर्ग, नायकनी वहु वात जोइ,
पण तेना चरित्र पर्यंत ऐतिहासिक माहिती होवानी जरुर लाग-
वाथी ते अहीं लखी छे. आ नूतन माहिती वदल कंटाळो न
खातां उलटथी एक धर्मनी ऐतिहासिक नवीन माहीती मेळवी
ने आनंद प्रदर्शित करशो, एवी पूर्ण आशा छे. हवे महावीर
तीर्थंकरथी अत्यार सुधी नवल विशेष शुं शुं थयुं, तेनो संक्षेप विचार
करीए. वांचक वर्ग, थोडी सवूरी करजो. आ माहीति आपने
उपयुक्त होय तेवुंज छे.

जैन धर्म अनादि छे, तो तेनी स्थापना प्रथम तीर्थंकर
वृषभदेव—चौदमा मनु नाभिरायना चिरणजीवी—एमणे करी
एवो जैन धर्मनो मत छे. जैन धर्ममां विशेष महत्वनी व्यक्ति शुं
ते तिर्थंकर छे ? तीर्थंकर एटले धर्म तीर्थना प्रवर्तक तेने ज्ञान
मति, श्रुति, अवधि (अंतर्ज्ञान), मन.पर्यय (मन ओळखवु), केवल

ज्ञान [त्रैलोकमांना सर्व, स्थावर, जंगम जीवोनुं, देवादिकोनुं, स्वर्ग, मृत्यु अने पातालनुं ज्ञान होवुं ते.] तेनी प्राप्ति थयेली छे. १२ अंग अने १४ पूर्व जेटलुं ज्ञान तेओने छे.

१२ अंगनुं संक्षिप्त वर्णनः—

१ आचारांग-मुनि क्रिया, २२ परिषह, २४ परिग्रहनुं वर्णनात्मक शास्त्र.

२ सूत्रकृतांग-देव, गुरु, शास्त्र, धर्मनुं तथा श्रावकोनुं विनयात्मक शास्त्र.

३ स्थानांग-६ गुणस्थान अने १४ गुणस्थानोनुं वर्णनात्मक शास्त्र.

४ समवायांग-द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, धर्म, अधर्म, ७ नरक, १६ स्वर्गनुं वर्णनात्मक शास्त्र.

५ व्याख्याप्रज्ञप्ति-जीव, अस्ति, नास्ति, नित्य, अनित्य अने ६०००० प्रश्नोत्तरो.

६ ज्ञातृकथांग-तीर्थंकरना तथा गणधरना पुण्यनुं वर्णनात्मक शास्त्र.

७ उपासकाध्यन-अर्हंत देव, निग्रंथ गुरु, दया धर्मनुं वर्णनात्मक शास्त्र.

८ अंतकृतांग-अंतकृत केवलीनुं वर्णनात्मक शास्त्र.

९ अनुत्तरांग--प्रत्येक तीर्थंकर साथे दश मुनिओनुं स्वर्गगमन थयुं तेनुं वर्णन शास्त्र.

१० प्रश्नव्याकरणांग—धर्म कथा ४ अने धन, धान्य, लाभ, हानिनुं शास्त्र.

११ विपाकसूत्रांग—वेदनीय, साता असाताकर्म वर्णन.

१२ दृष्टि प्रवादांग—१४ पूर्व, ५ प्रज्ञप्तिं ५ चुलीका, १ सूत्र अने १ प्रथमानुयोगनुं वर्णनात्मक शास्त्र.

प्रत्येक अंगनी पद संख्या १८ हजारथी ते एक अब्ज सुधी-नी छे. बार अंगनी पद संख्या ११ अब्ज, १३ करोड, १२ लाख २८ हजार ने पाच छे. प्रत्येक पदमां ५१ करोडथी अधिक श्लोक छे. आ बार अंगनुं वर्णन छे.

१४ पूर्वनुं संक्षिप्त वर्णनः—

१ उत्पाद पूर्व—सर्व वस्तुनी उत्पत्ति, विनाश अने स्थीरपणानुं वर्णन.

२ अग्रायणी पूर्व—सुनय, कुनय अने पृथ्वीनुं जाति भेदात्मक वर्णन.

३ वियानुवाद पूर्व—६३ शलाका पुरुषोनी शक्ति अने धैर्यात्मक वर्णन.

४ अस्ति—नास्ति पूर्व—सप्तभंग (स्याद्वाद) अने

शाश्वत, विनाशक वस्तुनुं वर्णन.

५ ज्ञान-प्रवाद पूर्व-मति आदि ज्ञानना ८ भेद अने गणित विषय फल उत्पत्ति वर्णन.

६ सत्य-प्रवाद पूर्व-हृदयादि ८ स्थानथी स्वरोच्चारात्मक वर्णन.

७ आत्म-प्रसाद पूर्व-कर्ता, भोक्ता, नित्य, अनित्य, जीव स्वभाव अने जि. गु. ४६.

८ कर्म-प्रवादपूर्व-आठ कर्मनुं वर्णन.

९ प्रत्याख्यान पूर्व-पापक्रियानो त्याग अने ६ संहनन (शरीर)नुं वर्णन.

१० विद्यानुवाद पूर्व-महा विद्या ५००, लघुविद्या ७००, अष्टांग निमित्त ज्ञान वर्णन.

११ कल्याणवाद पूर्व-६३ शलाका मंगलोत्सव, ५ कल्याणिक, १६ भावनानुं वर्णन.

१२ प्राणानुवाद पूर्व-वैद्यक, गारुड, श्वासोच्छ्वास, ८ योग, वायुज्ञाज्ञानात्मक वर्णन.

१३ क्रिया विशाल पूर्व-पुरुषोनी ७२ कला, स्त्रीना ४६ गुण; शिल्पभेद ८४नुं वर्णन.

१४ लोकबिंदु पूर्व-त्रण लोकनुं वर्णनात्मक शास्त्र.

चौदपूर्वनी पद संख्या; ९९,९०,००,००९ छे. आ चौदपूर्वनुं वर्णन.

आटलुं ज्ञान तीर्थंकर, केवली, श्रुतकेवली अने केवलीने होय छे. आ ज्ञान श्री महावीर तीर्थंकरने हतुं. साधारण केवलीने पण आ ज्ञान होय छे. फक्त तेने पांच कल्याणक नथी होतां. कल्याणक एटले इंद्र तरफथी थनारो तीर्थंकरनो उत्सव. श्रुतकेवलीने १२ अंगना शास्त्रो मुखोद्गत होय छे. महावीरथी ते जम्बुस्वामी पर्यंत उपरोक्त ज्ञान हतुं. भद्रबाहु सुधी ते कमी प्रमाणमां रह्युं. धर्मसेनाचार्य पर्यंत ११ अंग अने १० पूर्वनुं ज्ञान रह्युं. कंसाचार्य सुधी पाछे ११ अंगनुज ज्ञान रह्युं. सुभद्राचार्य १०, यशोभद्राचार्य ९, बीजा बाहुभद्राचार्य ८ अंगना धारक हता. भूतबली पर्यंत एकज अंगनुं ज्ञान रह्युं अने कुंदकुंदाचार्य सुधी एक अंगना ज्ञाता कोइ रह्युं नहि; पण आज जेम अंगज्ञाननो अभाव थयो छे, तेवीज स्थिति ते वखते नहोती. अहिं थोडी, त्यां थोडी, एम थोडी थोडी माहीति रहेली हती. सारांश—कुंदकुंद आचार्यना समयमां तीर्थंकरना समयनुं अगम्य ज्ञान रह्युं नहोतुं, पण तेनो अभाव ते वखते थयो नहोतो. एटले ते समये शास्त्रीयज्ञान घणुंज-थोडुं-पण रह्युं हतुं. बीजा बार वर्षमां भयंकर दुष्काळ

पडवाथी जैन धर्ममां एक नवीन मत प्रचारमां आव्यो हतो, ते कोण ? ते श्वेतांबर मत हशे ते वधारे पोतानो पग लंबाव्यो गयो, तेथी ते मतनो घणो प्रसार थयो हतो. ए सिवाय बौद्धमत पण किंचित हतो. अहीं बौद्धमत क्यारे स्थापन थयो, तेनो उल्लेख करीए तो अयोग्य थशे नहि एम धारी नीचे लखु छुं.—

बौद्धमतनी उत्पत्ति.

महावीरस्वामी पूर्वे बरोबर बसो वर्ष पहेलां जैनोना त्रेवीशमा सर्वजगद्विख्यात श्री पार्श्वनाथ स्वामी थइ गया हता. तेनी पछी पिहिताश्रव जैन मुनिनो शिष्य बुद्धिकीर्ति महान शास्त्रवेत्ता हतो, ते पंलास नगरीमां सरयू नदीने कांठे तप करीने रहेतो हतो. तेणे नदीमां एक मृत मच्छी जोइ, त्यारे पोताना मनमा बोल्यो—'अहिंसा परमो धर्मः'—हिंसा न करवी ए परम धर्म छे, पण आ मच्छी हिंसा कर्या वगर मरी गइ छे, तो तेने भक्षण करवामा हरकत शानी ? अर्थात् तेमां कांइ दोष नथी, कारण के तेमां जीव नथी, मच्छी निरजीव छे आवो विचार करी तेणे ते खाधी तेना गुरुए आ जाणवाथी तेने प्रायश्चित करवानु कह्युं, पण तेणे ते कर्युं नहीं ! अने अंगपर लालवस्त्र धारण करी बौद्ध मत्त स्थापन कर्यो. आ बौद्ध धर्मनो मूळ पायो. आज 'अहिंसा परमो धर्म.' छे एवुं

लाखो बौद्ध लोको माने छे, पण वर्षमा केटला माछलां, वांदा, आदि प्राणीनो नाश थतो हशे- ते जापानी अने चीना लोकोना ईतिहासपरथी स्पष्ट समजाशे. आ माटे विशेष उल्लेख विस्तार पूर्वक अहीं करवानी जरुर नथी. आ बौद्धोनी उत्पत्ति.

हवे केटलाक कहे छे के अशोक वगेरेए ते धर्म उत्तम पाळ्यो ए वात जूदी छे, पण मूळ रचना एवी छे के ते वखते आ धर्म आपणा चरित्र नायकना समयमा एकदा उन्नति जोइने गभीर स्थितिमां आवी पहोंच्यो हतो, अने ते वखते आपणा चरित्र नायकनो उदय थयो. तेओ बधी बाजुओपरथी आवता हुमलाने अटकावी शक्या नहि, छता तेओए ते हुमलाने कोइ पण रीते श्रेष्ठता अपावी नहि. अत्यारे बीजी बाजु न वळता अमारा थाकी गयेला वांचक वर्गने हवे आपणा चरित्र नायकनी ओळखाण करावबानी शरुआत करुं छु—

आपणा चरित्र नायक कुंदकुंदाचार्यनो जन्म मालव देशमां (मालवामा) बुंदी—कोटा नजीक आवेला बारापुर नामे संस्थानमां थयो, ते वखते ते नगरमा कुमुदचंद राजा कुमुदचंद्रिका राणी साथे राज्य करतो हतो. अने बहुधा धंधादारी व्यापारी वसता हता. तेमा एक कुंदश्रेष्ठी नामे सधन

अने धार्मिक व्यापारी हतो. आ गृहस्थ आपणा चरित्रनायकनो तीर्थरुप हतो तेने कुंदलता नामनी सहचारिणी हती. ते कोण हता ते वांचकवर्गने जणाववानुं काम नथी. आ उभयथी वीर संवत ४९७ विक्रम संवत ९ मा आपणा चरित्र नायक जन्म्या. मातपिताना नाममां रहेलुं सादृश्य जोइने सर्वेए अर्भकनु नाम 'कुंदकुंद' पाडयुं. पोताने पुत्र थयो तेथी कुंदशेठे त्याना श्री शांतिनाथ स्वामीना मंदिरमां देवनी पूजा करी जन्मेला पुत्रवशनी यशोध्वजा आकाशमां चढावी, एटले त्याना ते मंदिरपर ध्वजा चढावी तथा शिखरपर कलश पण चढाव्यो! अस्तु. आगळ जतां आ पुत्र खेलतो खेलतो सौने आनंददायक थइ पडयो. दिवसे दिवसे कुमार वृद्धि पामतो गयो पांच वर्ष पछी केवल बाल्यावस्था पसार थइ, अने बीजा चार वर्ष गया एटले खेल करवा सिवाय बीजो धंधो हतो नहि. तेना सोबतीओमां पोते हमेशां सौथी वधारे चढीआतो हतो. ते पुत्र एकदम म्होटो थवा लाग्यो. आ जोइने पिताने शिक्षण माटे काळजी थइ. ते वखते आजना जेवुं शिक्षण नहोतुं. शाळा, विद्यालय विश्वविद्यालयनो ते वखते अभाव हतो ए स्पष्ट छे. बहु थाय तो ते वखते एक अध्यापक पोताने घेर विद्यार्थीओने राखी शिक्षण आपता. ते वखते वळी आजना जेवो प्रखर जीवनकलह

पण नहोतो. अने लोक जीवनकलह माटे शीखता नहता, पण आजे जेम ज्ञान माटे पाश्चात्य स्टेन्डर्डशाइ सरखा चेला अगम्य (पूर्वात्य) गुरुनी सेवा करवा मडया छे; ते प्रकारना ज्ञान, अध्यात्मक ज्ञान शिखवापर लोकनु चित्त हतु. ते वखते भारतवर्ष सुसंपन्न हतो अने सीकंदर बादशाहनी स्वारी सिवाय तेने बीजा एकपण दुःखनो परिचय पडयो नहतो. आवा सुभिक्ष वखने शुं लोकोने पेटभर मेळववाने ज्ञाननी जरुर हती ? नहीं. नहीं! तेनुं समग्र चित्त क्षत्रियविद्या अने ब्रह्मविद्या—अध्यात्म विद्यामांज हतुं. कुंदशेठ पोते स्वत सधन व्यापरसी होवाथी द्रव्यनी आशा एवी विशेष न हती. तेमज पोतानो पुत्र क्षत्रियविद्यामा पटुत्व मेळवे तेम पण लाग्यु नहीं ते समये मोटा अने सर्वमान्य अध्यात्मज्ञान प्रचलित होवाथी त्या तेनु चित्त वळ्युं, ए कहेवानी जरुर नथी, पण गुरुने माटे कोनी योजना करवी ए प्रश्न हतो. पूत्रने पण होशीयार अने विद्वान थाउ एवी इच्छा हती अने तेथी तेणे पोते पोताना गुरुनी-शिक्षकनी गोठवण करी ते नीचे प्रमाणे.—

एक दिवसे कुंदकुंद कुमार पोताना गोठीआ साथे खेलतो खेलतो वनमा आव्यो, त्या तेने एक नग्न, शात अने क्षमावान मुनि दृष्टिगोचर थया. साधारण नियम एवो छे के

कोइ आचार्य, मुनि, किंवा साधु होय त्या जइ नमस्कार करी पुजा करवी जोइए. आ नियमान्वये ते वखते ते मुनिना समक्ष पुष्कळ श्रावक आवीने बेठा हता, अने केटलाक तेनी पुजा करता हता. आवो प्रकार जोइने आ कुमारनी साथे आवेला सोबतीओए तो तरतज पोबारा गण्या, पण कुमारना मननी अवस्था ते समये कंइ भिन्नज थइ अने मनमा स्फुरी आव्युं के शाबास मुनिवर्य ! जो मनुष्यने जगतमां तारा जेवा पुज्य थवु होय तो तेणे खरेखर तारा शांत, गंभीर, उदार अने सर्व हितकारी सद्गुणोनुज अनुकरण करवु जोइए

जगतमा हाल स्वार्थसिवाय अन्य वस्तुमां नजर न पहोंचाडनारी व्यक्तिओ पुष्कळ छे, पण स्वार्थ साधी परहित करनारी तारा जेवी व्यक्ति खरेखर विरलज, तेथी तनेज आ जगतमा धन्यवाद छे ! आवो विचार करी ते कुंदकुमार बीजा छोकराओ साथे घर न जता केटलाक तेनी सोबती के जे तेनी राह जोइ रस्तामा उभा रह्या हता तेने साथे लइ ते दिगंबर मुनि पासे आव्यो, अने मुनिनुं तप, ध्यान अने दयाभावथी बनेलुं शांत अने गंभीर रुप जोइने अने त्या चालतो धर्मोपदेश सांभळीने ते कुंदकुंद कुमारनुं चित्त थंडुगार थइ गयुं, अने ते मुनिने

छेटेथी नमस्कार कर्या अने ते मुनिनो धर्मोपदेश सांभळी तेना मनमा जुदी जुदी कल्पना तरंग उठवा लाग्या के खरेखर मुनि! आ संसार असार छे, माबाप भाइ सर्व मायानुं बजार छे. आ जीवने मनुष्य, तिर्यंच, नरक अने देवगतिमा एकलुं भ्रमण करवुं पडे छे. जेम सुखनो भोक्ता एकज छे तेम असह्य दुःखोनो भोक्ता आ जीव छे. नरजन्म दुर्लभ छे अने तेमां सद्धर्मप्राप्ति दुर्लभ छे, तेथी काकतालियन्यायवत् मळेलो जन्म चाल्यो न जाय ते माटे इश्वरचिंतवनमा तल्लीन थवा जेवुं खरुं कल्याणजीवन बीजुं कोइ नथी. आ मुनिनुं कहेवुं तेने तद्दन यथार्थ लाग्युं. आपणे जो स्वतः आ विचार प्रमाणे चालीए तो माबापने दुःख थशे पण विचारने अंते ए आव्युं के—माबाप कोना? जीवमां जीव छे त्यां सुधी मारुं सौ बोले छे पण एकदा जीव नीकळी गयो एटले सर्व संबंध अने सगपण तूटया. जे मृदु शरीरने उत्तम स्वादिष्ट पदार्थोथी पोषण करीए, उत्तम वस्त्रोथी सुशोभित करीए, ते शरीरनो आखर चीता उपर नाश थवानो! अर्थात् आ संसार माल मायावी—क्रोध, मान, माया, लोभनु बजार छे. क्रोध, मानने जीत्या सिवाय खरी आत्मोन्नति नथी. हवे जे थाय ते भले थाय, पण हुं आवा सज्जन अने हितकर मुनिनी सोबत

छोडनार नथी. आवो दृढ निश्चय करीने ए ते मुनि पासे गया. ते मुनि कोण हता ते वांचके जाणी लीधु हशे. आ संवत ४० मां पट्टारुढ थयेला जिनचंद्र मुनि हता. कुदकुदकुमार तेने नमस्कार करी तेमनी पासे जइ बेठो, अने तेमनी पासे ज्ञानामृत प्राप्त करवानी इच्छा दर्शावी. आ वखते तेनी वय ११ वर्षनीज हती.

आ कुंदकुदकुमार आखरे जिनचंद्र मुनीनुं शिष्य स्वीकारी पोते तेना संघनी साथे ज्ञाननुं पान करतो करतो चाल्यो. आ सर्व वृत्तात तेना मातापिताए जाण्युं, एटले तेओ आश्चर्य चकित थया, पण एक दृष्टिथी तेओने ते योग्य लाग्युं अने विचार्युं के पुत्र ज्ञानप्राप्ति माटे गयो छे, अज्ञान माटे नहिं अने तेथीज तेओए पोताना मननुं समाधान स्वत. कर्युं.

कुंदकुंदकुमारे पोताना गुरु पासे रही जैनशास्त्रनो उत्तम अभ्यास कर्यो, अने जिनचंद्र आचार्यना सर्व शिष्योमां पोते पट्टशिष्य थया अने आ अधिकार तेनी ससार विषये पूर्ण विरक्ति जोइनेज आपवामां आव्यो. कुंदकुंदकुमारे पोतानी ३३ मा वर्षनी वये गुरु जिनचंद्र पासेथी दीक्षा लीधी. जिनचंद्राचार्य पोते अवधिज्ञानी मुनि हता; तेणे पोतानो अंतकाळ समीप जाणी पोताना पट्टशिष्य कुंदकुंदने पट्टाधिकार आप्यो,

अने पोते ध्यानस्थ रह्या—समाधिस्थ थया जे समये तेने पट्टाधिकार मळवाथी तें पट्टाचार्य थया, ते वखते वीरसंवत ५३६ हतो. आ पट्टाभिषेक पोताना गुरु पासेथी पोष वद ८ मे थयो अने हवेथी कुंदकुंदचार्य पट्टाधिकारी वन्या. अत्यार सुधी सघळी गादी उज्जयनीमा थइ गइ, एवो पट्टावलीमा पूर्ण उल्लेख छे. आ वखते मात्र जुदे ठेकाणे स्थापवामा आवी तेनो उल्लेख पछी करीश. ज्यारे ए पट्टाधिकारी थया ते वखते दिगंबर मुद्राधारी मुनि हता, ए मात्र पकी रीते लक्षमां लेवुं जोइए. कुंदकुंदाचार्यनी नीचे घणा शिष्योनी मंडळी हती, तेमां मुख्य शिष्यनु स्थान उमास्वामीने आपेलुं हतुं, अने तेज तेनी पछी पट्टाधिकारी बन्या. अस्तु.

जिनचंद्राचार्य स्वर्गस्थ थया पछी तेणे उत्तम रीतिथी पोतानो अधिकार बजाववानी शरुआत करी. पोताना शिष्योने चारे तरफ मोकली जैन धर्मनो प्रसार कर्यो अने चारे बाजुए धर्मोपदेश सतत् शरु कर्यो. गुरुनी पछी ते स्वतंत्र आत्मकल्याण माटे तप करवा लाग्या. आगळ जता आत्मनिश्चयथी अनेक काल्पित शंकानुं समाधान कर्युं, ते वखते तेने मात्र विशेष श्रम पडयो, कारणके ते समये अंग अने पूर्वज्ञाननो लोप थयेलो हतो, ए सिवाय अवधि ज्ञानी कोइ हतो नहि, त्यारे पोताने

उत्पन्न थयेली शका कोण निवारशे तेनी मोटी मुशिबत थइ, पण तेना मनमां एक युक्ति सूझी.–ते ए के +विदेह क्षेत्रमां श्रीमंदरस्वामी साश्वत केवली छे त्या जइने तेनी पासेथी स्वतत्र शंकानु निवारण करवुं, पण आपणे मानवी छीए. ते क्षेत्रमां आपणु गमन क्यांथी थइ शके ? विद्याधर के विमाननी सहायता वगर ते करवुं मुश्केल अने अशक्य. त्यारे आ विचारथी ते निरुपाय थइने पोताना गुरुए कहेली मुनि क्रिया सिवाय बीजी गति नथी तेम जाणी तप करवा मंडया अने पंच महाव्रत उत्तम रीतिथी पालन करवा लाग्या.

पछी कोइ एक वेळा श्री कुंदकुदाचार्य फरतां फरता एकला बारापुरीना बहीरुद्यानमा आवी तप करवा लाग्या, अने दृढ ध्यानथी पदस्थ, पिंडस्थ, रुपस्थ अने रुपातीत ए चार ध्याननो विचार करवा लाग्या. ध्यानस्थ थयेला मनमा तेणे श्रीमदर-स्वामीनुं समोशरण रचीने श्रीमदरस्वामीने त्रिकरण शुद्धिथी नमस्कार कर्या, तेनी साथे चमत्कार एवो थयो के विदेह क्षेत्रमां रहेला श्रीमंदरस्वामीए ते आचार्यने त्या समोशरणमां–सभामां गंभीर नादथी दिव्य ध्वनि द्वारा ' सद्धर्मवृद्धिरस्तु ' एवो आर्शि

+ नोंध–विदेह क्षेत्र सबधी भुगोलात्म वर्णन आगळ योडक कर्यु छे.

वाद आप्यो.ते वेळाए ते सभामां विदेह क्षेत्रना चक्रवर्ति पद्मरथ राजा समोशरणमां बेठेला हता, तेणे नम्रताथी पूछयुं के-अहीं कोइ नवीन आव्यो नथी अने कोने 'सद्धर्मवृद्धिरस्तु' कहुं. त्यारे उत्तर त्यांज मळयो के राजा,आ द्वीपनी दक्षिणे भरत क्षेत्र छे त्यां पंचमकाल-भयंकर काल वर्तमान छे. ते क्षेत्रमां बारापूर नगरीना बाह्योपवनमा रहेला श्रीकुदकुंदे ध्यानस्थ रही मने नमस्कार कर्या; तदुपरात त्या पचमकाळ होवाथी अधर्मी, पाखंडी, व्यसनी हिंसक आदि मनोवृत्तिना घणा लोक वसे छे. सयंमी, जिन मतानुयायी मुनि घणा थोडा छे; कुलिंगी घणा छे. ते क्षेत्रमा घणा थोडा नर छे तेथी ते कुदकुद मुनिए पाप नष्ट थवा अने मनमाथी शका दूर थवी ए घणुं मुश्केल छे तेम जाणी दुरथीज फक्त स्मरण करी मने नमस्कार कर्या, तेथी में तेने आटलोज आशीर्वाद आप्यो.

जे वखते कुदकुदनुं उपलुं वृत्तान्त श्रीमंदरमुनिए पद्मरथने कह्युं ते वखते ते स्थळे श्री कुदकुंद मुनिना पूर्व *जन्मना बे भाइ के जे मरीने पूण्यबलथी तेज क्षेत्रमा जन्म्या हता ते हाजर हता अने तेओए उपलु वृतांत जाण्यु,तेथी ते तरतज त्याथी उठीने विमानरुढ थइ भरत क्षेत्रमां आव्या अने श्रीमंदरस्वामीए

* टीप-जैनधर्म पुनर्जन्ममा समत छे.

कह्या प्रमाणे वारापूरना बाहिरुद्यानमां आव्या अने त्यां कुंदकुंद मुनिने जोइने तेओए तेने साष्टांग नमस्कार कर्या ते ते वखते ध्यानस्थ हता तदुपरात ते समय रात्रिनो हतो, तेथी मुनि बोल्या नहि, त्यारे त्यां पासे रहेला गृहस्थने कह्युं के अमे मुनिना पूर्व जन्मना बंधु छीए, तेमने मळवा आव्या छीए अने मुनिने विदेह क्षेत्रमां लइ जनार हता, एवुं कही तेओ पुनः विमानरुढ थइ विदेहमां चाल्या गया.

प्रातःकाल थयो के ते सर्व वृतात मुनिने खबर पडी, त्यारे तेणे श्रीमंदरस्वामीना दर्शन थया वगर भोजन करवुं नथी, एवो नियम कर्यो अने पुन. पूर्ववत् ध्यानस्थ बेठा. पुनः विदेहमा समोसरणमां श्रीमदरस्वामीए तेवाज आर्शीवाद आप्या, त्यारे पद्मस्थ राजाए तेनुं कारण पूछता श्रीमदरस्वामीए दिव्यध्वनिथी एवुं वृत्तांत कही दर्शाव्युं, के मे पहेलां जे वृत्तात तने कह्युं हतु ते सांभळीने कूंदकूंदना बे बधुओ मुनि पासे गया, त्यारे ते ध्यानस्थ हता तेओ मूनिनी पासे एक मनूष्यने सर्व वृत्तांत कही पाछा आव्या. आ सर्व हकीकत—प्रात.काळे कूंदकूंद मुनिने जाणवामा आवी. तेने त्यारे विशेष आनंद प्राप्त थयो अने मारु दर्शन करवा वगर अन्नग्रहण न करवुं एवो दृढनिश्चय करी तेणे ध्यान धर्युं अने ध्यानमा मने नमस्कार कर्या

तेथी में तेने आ वखते आशीर्वाद आप्यो.

आ हकीकत जाणी त्या हाजर रहेला कुदकुंद मुनिना चंधुद्वय तरतज पुनः विमानरुढ थया अने ज्या श्री कुंदकुंद मुनि तप करता हता त्यां आवी तेमने नमस्कार कर्या अने विदेहमां चालवानी विनंति प्रदर्शीत करी. आथी मुनिने घणो उल्लास थयो अने विमानारुढ थइ निकल्या. मुनिए निकळती वखते पिच्छी अने कमंडलु साथ लइ लीधा. तेमा पिच्छी विमानमा शिघ्रगतिथी रस्तामां कोइ स्थळे पडी गइ, तेनो पत्तो लाग्यो नहीं त्यारे पिच्छी सिवाय अयोग्य देखाय, एम जाणी विमान त्या अटकावी तेनी तपास करी, पण ते कंइ मळी नहीं, त्यारे पासेना मानस सरोवरपर ते गया अने त्यां गीध पक्षीनी पडेली कोमळ पांखनी पिच्छी करी लीधी अने पछी तेणे विदेह तरफ प्रयाण कर्युं. रस्तामां [illegible]क्षेत्र, नाभिगिरी, मेरु वगेरे पर्वत आव्या ते उलघी विदेहमा जइ अयोध्यापुरी नगरीनां नामना बाह्योद्यानमां रहेला प्रदेशमां श्रीमंदरस्वामीना समोसरण पासे उतर्या. ते नगर जोया पछी कुंदकुंद मुनिने ते बे देवोए कह्युं के आ स्थळे सतत् चतुर्थकाळ एटले सौख्यनो काळ छे अहीं कोइपण लेशमात्र दुःखी मालम पडतुं नथी. आ अचळ क्षेत्र छे.

आवी संक्षिप्त माहीती मेळवी ते त्रणे समोशरण पासे जवा नीकळ्या. मुनि इर्यापथ शोधी शमोसरण पासे द्रष्टि करी नमस्कार करी चाल्या. त्यां ते बे देवोने मोटी मुश्केली ए पडी के आ ठेकाणे पांचसे धनुष्यकायावाळा सर्व माणसो छे, अने आ तो चार हाथ देहवाळो छे, तो तेने क्यां बेसाडवो ? बीजे कई बेसाडवाथी तेनो पत्तो लागशे नहीं. आखरनो विचार करी तेओ कुंदकुद मुनिने मूल्य पीठपर एटले श्रीमदरमुनिनी एकदम समक्ष लाव्या. पछी कुंदकुद मुनिए श्रीमंदर मुनिने त्रण प्रदक्षिणा करी नमस्कार कर्या, अने तेनु स्तवन करी तेओ त्याज आगळ बेठा.

आटलुं थया पछी त्या विदेह क्षेत्रना सार्वभौम राजा पद्मस्थ त्या आव्या अने तेणे श्रीमंदरस्वामीने नमस्कार करीने ते महा पीठपर वामनमुर्ति जोइ; ते मूर्तिने हळवेथी चपटीमां लइ हथेलीमा बेसाडी, अने श्रीमंदर स्वामीने आ मूर्ति कोण छे ए कहेवानी विनंति करी, त्यारे शाश्वत् तीर्थंकर श्रीमंदरस्वामीए पोतानी दिव्य ध्वनिथी उत्तर आप्यो के, जे मुनि विषये में काले कह्युं हतुं अने जेने में 'सद्धर्मवृद्धिरस्तु' एवो आशीर्वाद आप्यो हतो तेज आ भरतक्षेत्रमां आ काळना धर्माध्यक्ष आज छे. आना बे बंधुए तेने अहीं लावी मुक्या छे.

पछी स्वतः कुंदकुंद मुनि उठया, अने तेने जे जे शंका हती ते ते त्यां कही बतावी. श्वेतांबरोनी उत्पत्ति विषयनुं वर्णन कही बताव्युं तेवीज रीते कर्णाटकमां आवेला मुडबिद्री, श्रवण बेळगुलनी, गोमटेश्वरनी मूर्ति विषये चतुर्थकालनी स्थिति; तेमज गिरनार पर्वत उपर आवेली चंद्रगुफानुं वर्णन तेमणे जाण्यु सिवाय जे काइ शंका हती तेनुं मुनिए निवेदन कर्युं अने समाधान पण प्राप्त कर्युं त्यां विदेह क्षेत्रमां कुंदकुद मुनिने बधा मळी आठ दिवस व्यतित थया. सर्व रचना जोइने तेणे पोताने स्वतः सधन्य मानी लीधो.

त्या एक दिवस पद्ममरथ राजाए कुंदकुंद मुनिने आहार लेवानी विनंति करी. तेना उत्तरमां मुनिए कह्युं के अमारुं क्षेत्र जुदुं छे तो अमे परक्षेत्रमांथी केवी रीते आहार लइ शकीए? तेम करवुं मुनिक्रिया माटे योग्य नथी. आ उत्तर सांभळी राजाए तेमनी स्तुति करी अने खड्गधारापेक्षाए मुनिक्रिया तीक्ष्ण छे अने तमे ते पाळी तेथी तमने धन्यवाद घटे छे. तेटली मुदतमां मुनिए कंइ विद्यापठन कर्युं. चार युग अने अनुयोगनुं संपूर्ण वर्णन जाण्यु. पछी पूर्ण शंका रहित थया अने घणुज विशेष ज्ञान मळवा कुंदकुंद मुनि पूर्ववत श्रीमंदरस्वामीने नमस्कार करी सर्वनी रजा लइ बे देवोनी साथे विमानारुढ

थया. निकळती वखते त्यां मुनिने तेमणे एक धर्म-सिद्धांत पुस्तक आप्युं, ते लइने तेओ चाल्या, त्यां वाटमां तेओ मेरुपर्वत उतर्या. अने जिनबिंबनुं दर्शन करीने विजयार्द्ध पर्वतपर जिनबिंबनुं दर्शन करवा गया. त्यांथी कैलासगिरी, सम्मेदशिखर वगेरे क्षेत्रो करतां करतां चाल्या. पछी पुनः रस्तामां साथे लावेला हता ते पुस्तक पडी गयुं ते पुस्तकमा राजनीति, मंत्र अने अनेक विद्यानो भंडार हतो. आखरे लवग समुद्रमांथी आवता आ ग्रंथ पडयो ते मळशे नहि अस्तु. तरतज विमानारुढ थइ ते देवद्वय अने मुनि मळी त्रणे जण भरतक्षेत्रमां आव्या, अने बारापुरना बहिरुद्यानमां कुंदकुंद मुनिने छोडी दीधा. त्या ते देवोए तेमना उपर पुष्प वृष्टि अने पूजा करी मार्गप्रयाण कर्युं. विदेहमां जवा माटे कुंदकुंद मुनि नीकळ्या त्यारे वाटमां पिछी गुमावी हती अने गीध पंखीनी पांखनी- पिंछी करी हती तेथी तेमनुं नाम गृध्रपिच्छाचार्य पडयुं, अने विदेहमां गया त्यारे तेने एळाचार्य कहेवा लाग्या.

कुंदकुंदाचार्य विदेह क्षेत्रमा गया हता एवो उल्लेख छे; विदेह क्षेत्रमां जइने तेणे त्यांना शाश्वत् तीर्थंकर श्रीमंदरस्वामीना दर्शन कर्या हतां अने स्वतः थयेली शंका श्रीमंदरस्वामी पासेथी निवारण करावी लाव्या हता. विदेह क्षेत्र संबंधीनुं वर्णन जैन

ग्रंथमां छे. हमणा जे पृथ्वी (Globe) देखाय छे तेना करतां ते अधिक मोटु छे पण्तु जैन शास्त्रनुं मत छे, अर्थात् उत्तर अने दक्षिणे घणोज्ञ प्रदेश छे. आज जे पृथ्वीपर आपणे वसीए छीए ते पृथ्वीभाग छे अने रुपीए वे आनी सरखी छे एम मानवु जोइए. हमणा जे समुद्र आपणी पृथ्वीने वेष्टित थएलो छे ते लवण समुद्रनो थोडो भाग फक्त खाडीरुपेज छे. उत्तर ध्रुव अने दक्षिण ध्रुव पासे आगळनो प्रदेश हजारो योजन लांबो छे, त्यां जवाने बुद्धिमत्ता अने कल्पना शक्तिमां उत्तम इंग्लंड अने अमेरिका सरखा देशो प्रयत्न करी रह्या छे, अने ते प्रयत्न सतत् थशे अने त्यांना हवा पाणीनी परस्थिति अनुकूल थशे तो खात्रीथी ते बाजुनो पुष्कळ प्रदेश प्राप्त थशे, अने तेवोज जैन धर्मनो मत छे. अस्तु.

विदेह क्षेत्रमांथी श्री कुंदकुंद स्वामी आव्या पछी तेमने दर्शने तेनो राजा, तेना मातापिता कुंदलता अने कुंदशेठ, अनेक श्रावक श्राविका अने हजारो लोको आव्या. पछी तेमणे विदेह गमननुं वृत्तांत सर्वेने कही धर्मोपदेश कर्यो. आ वृत्तांत जाणी तेओने संतोष थयो. पछी ते नगरना बाह्य प्रदेशमां रही जैन धर्मनो अने मुनि धर्मनो बोध श्रावक तथा अन्य लोकने आप्यो तथा केटलाक श्रीमंतोए संसार असार छे एम जाणी तेमनी

पासे दीक्षा लीघी. आवा गरीब अने श्रीमत मळी एकदर ७०० लोक मुनिपद ग्रहण करीने तेमना शिष्य बन्या, केटलीक श्राविका थइ, तेणे सर्व परिग्रह (वस्त्रादि) त्याग कर्यो अने फक्त अंग उपर १६ हाथ साडी, पिच्छी, कमंडलुनो स्वीकार कर्यो, केठलाक व्रतधारी बन्या, आ प्रमाणे ते नगरीमा तेमणे धर्मप्रभावना उत्तम रीतिथी करी. नित्य अनशन युक्त तप करीने पारणा करवा लाग्या, आथी तेमनी चारे दिशाए विख्याती थइ.

पछी श्री कुंदकुंद स्वामी पोताना शिष्यने साथे लइने धर्मोपदेश करवा माटे फरता फरता चाल्या तेमणे बहुधा हिंदुस्ताननां घणा भागोमां विहार (प्रवास) करी धर्मोपदेश कर्यो, अने केटलेक ठेकाणे पट्ट (गादी) स्थापित करी, ते ते प्रांतोमां सतत् धर्मोपदेश मळवाथी धर्म जागृति रहे तेवी व्यवस्था करी. जैनमां चार सघ छे—१ मूलसंघ २ नदिसंग ३ सिंहसंघ ४ काष्टासंघ आ पैकी कुंदकुंदाचार्य पूर्वे थइ गयला ऋषभसेनाचार्ये मूलसंघनी स्थापना करी, बाकी त्रण संघ कुंदकुंद आचार्ये स्थापित कर्या छे एवो उल्लेख छे, तेमज १ भारती २ पुष्कर अने ३ चंद्रकान्ति एम त्रण गच्छ अने १ बलात्कार २ देश अने ३ कालोग्र एम त्रण गच्छ कुंदकुद स्वामीए स्थापित कर्या छे. बलात्कार गणना चार पट्ट १ दिल्ली २ मलयाद्रि ?

(उज्जयिनी) ३ हुमस (दक्षीणमां) ४ वरंग (कर्णाटक). देशगणना चार पट्ट १ दिल्ली २ द्वारसमुद्र (काठीयावाड) अने बीजां बे स्थळो अने काष्ठोग्रगगना पट्ट चार, १ दिल्ली २ यद्लापुर ३ केयञ्ज अने ४ लखमीसर, आ प्रमाणे पट्टनी स्थापना कुंदकुंदाचार्ये करी. आ प्रमाणे माहिति आधुनिक भट्टारकना ग्रंथद्वारा मळे छे. आ प्रमाणे कुंदकुंद मुनिए पुष्कळ ठेकाणे प्रवास करी धर्मोपदेश कर्यो ते स्पष्ट जणाय छे. एमनो मुख्य पट्ट उज्जयिनीमां हतो एवो पट्टावळीनो अभिप्राय छे भद्रबाहु [बीजा] थी आवता सर्व पट्टाधिकारी उज्जयिनीमां थया, एवु पट्टावलि परथी समजाय छे कुंदकुंदाचार्य घणा मोडा थया, पण ए आचार्य सर्व भट्टारकोमां अने ग्रंथोमा आवछे ते परथी तेमनुं महत्व स्पष्ट व्यक्त थाय छे आज कोल्हापुरमां जे पट्ट छे ते मूलसंघमाथी छे एवो तेमां उल्लेख छे. एटलापरथी तेणे दिल्लीथी ते कर्णाटक पर्यंत देशाटन कर्युं, अने धर्मोपदेश आप्यो ए स्पष्ट देखाय छे

आ प्रमाणे प्रवास करीने उज्जयिनीमां आव्या पछी श्वेतांबर मतनुं विशेष जोर थयुं छे एम समजाय छे. केटलाक लोक एवुं कहे छे के आ श्वेतांबर मत पूर्वना आचार्ये स्थापित करेलो छे जिनेंद्रमुनिना नग्नस्वरूपावर लावी तेने वस्त्रो वगेरे पहेरावी दाग

दागीना घाल्या छे अने खोटो मत स्थापित कर्यो छे; त्यारे शक होय तो तेनो बंदोवस्त जल्दी करवो जोइए अने खरेखर भद्रबाहु पछी श्वेतांबर लोक अने मुनि राजाश्रित हता तेथी मन-मान्युं पोतानु वर्तन करवा लाग्या. कुंदकुंद आचार्य सरखो जिनसिंह चोगरदम गर्जतो होवाथी लोकना मनमां एवी भ्रांति उत्पन्न थइ के " दिगंबर अने श्वेतांबर एकज छे. आटलुं तो नहि, पण वळी श्वेतांबर पूर्वनो छे अने दिगंबरनी उत्पत्ति श्वेतांबर पछी थइ छे." आ प्रमाणे लोकमां असंतोष उत्पन्न थवाथी तेओ उपर प्रमाणे तकरार कुंदकुंद आचार्य पासे लाव्या अने खरुं कोण एनो प्रथम निर्णय करवा माटे अने पछी असत्यनुं खंडन करवा माटे विनति करी. पछी श्वेतांबरी लोकने श्री नेमिनाथ निर्वाणना-क्षेत्र गीरनार पर्वत उपर वाद करवानो छे एवुं जणावी त्यां दिगंबर लोकने भेगा कर्या अने त्यां भेगा थयेला संघनुं संघ–पतित्व कुंदश्रेष्ठीने आपी सर्व दिगंबर मंडळी गिरनार पर गइ अने श्वेतांबर लोक पण पोतपोताना गुरुने लइने त्यां आव्या.

जेवी रीते माळवामांथी अने बीजा भागमाथी दिगंबर लोकनो संघ लइ कुंदकुंदाचार्य गिरनार पर गया तेवीज रीते गुजरातमांथी भद्दिचंद्र, जिनचंद्रादि अनेक साधुओ साथे लइ

गुजरातमांथी श्वेतांबरी लोकनो संघ गिरनार गयो. उभय गिरनार पर्वतनी तळेटीमां मळ्या. उभये जुदा जुदा ठेकाणे मुकाम नाख्यो. सौ पोतपोताने खोटा अने खरा वर्णववा लाग्या. पछी एक दिवसे ते पर्वतनी तळेटीमां उभयपक्षनी सभा बोलावी ते ठेकाणे ठाठथी वाजतेगाजते प्रथम श्वेतांबर यति अने लोक आव्या पछी श्री कुंदकुंदमुनि पोताना ७०० शिष्योने साथे लइ दिगंबर संघ साथे ते स्थळे आव्या. पछी तरतज वादविवाद थयो. श्वेतांबरोए कयुं के "वस्त्र वगर जीवने कदी मुक्ति थती नथी." । अने दिगंबरोए एवुं कयुं के जीवनी उत्पत्तिज नग्नावस्थामां थाय छे अने ज्यारे तेनुं मरण थाय छे त्यारे नग्नावस्थामांज जगत छोडी जाय छे. तेनी साथे वस्त्र वगेरे जेनुं कंइ नथी एटले मूळ अवस्था दिगंबर वृत्तिज—आ जीवने कार्यकारी छे. आ प्रमाणे घणा दिवस वाद चाल्यो. श्वेतांबर, दिगंबरी संघनुं कहेवुं कबूल करे नहि अने दिगंबर, श्वेतांबरी संघनुं कहेवुं सांभळे नहि. दिगंबरी संघमां जेम कुंदकुंदाचार्यने अनेक सुविद्या सहाय हती, तेम श्वेतांबरी संघमां जिनचंद्र अने महिचंद्रने अनेक कुविद्या आवडती हती. एक पोतानी विद्याना जोरथी कोइ दुर्गम्य प्रश्न नाखे, तो बीजो तेने तोडी नांखे; आ प्रमाणे वाद एकदम मटी न जाय, तेम निर्णय पण

एकदम थाय नहि. उभयक्षना लोक कंटाळ्या, ते वखते एक दिवसे कुंदकुंदाचार्ये एवो निश्चय कर्यो के आज हुं खरा निश्चय पर लावुं, त्यारेज उठीने सभानी बहार जाउं. आवी प्रतिज्ञा करीने तेओ सभामां आवी दाखल थया के तरतज भरसभामां तेनो उपहास थवो एटले एवी रीते थयुं के एक नानुं माछलुं श्वेतांवरी लोके कमंडलुमां नांखी तेने ढांकी दइ कुंदकुंदमुनिने एवो प्रश्न कर्यो के आमां शुं छे ? आम ज्यारे पूछ्युं के तरतज तेणे तेमां कमलपुष्प छे एवो उत्तर आप्यो अने तरतज कमळपुष्प सर्वने देखाडयुं, त्यारे श्वेतांवरी लोक झांखा पडया, परंतु आजनो प्रसंग योग्य नथी, एवुं तेमणे कह्युं. वाद शरु थयो. ते वादमा श्वेतांबरोए वीर, कालिकादेवी इत्यादि जैनमत विरहित देवोनुं आवाहन कर्युं, पण श्री कुंदकुंद मुनिए मूलमंत्रनुं स्मरण करी ते देवोनु त्या आगमनज बंध कर्युं. पछी वाद कर्यो अने कह्युं के दिगंवरी धर्म प्रथम के श्वेतांवरी प्रथम—एनो कोइ प्रबळ पुरावो बतावो अगर सिद्ध करी आपो. त्यारे सर्वे श्वेतांवरोने लटपट थइ पडी अने तेज रहित थइ स्तब्ध रह्या. पछी कुंदकुंद-आचार्ये बंने संघने साथे लइ गिरनार डुंगर उपर गया, अने त्यां रहेला श्रीमन्नेमिनाथ निर्वाण स्थाननुं दर्शन करी, विदेह क्षेत्रवासी

शाश्वत् तीर्थंकर श्रीमंदरस्वामीनुं स्मरण कर्युं अने पंचपदनुं स्मरण करी एवु बोल्या के दिगंबरी धर्मनी स्थापना प्रथम के श्वेतांबरीधर्मनी स्थापना प्रथम–एनो निर्णय थवानो होय तो अहीं कोइ पग तेवो चमत्कार थाओ! तरतज थोडी वेळाए त्यां 'दिगंबरी धर्मनी स्थापना प्रथम' एवी थोडो वखत सुधी गभीर नादथी आकाशवाणी थइ. आ थयुं के तरतज श्वेतांबरी लोक मदगलित थइ त्यांथी भागी गया. पछी कुंदकुंद मुनिने दिगंबर संघ मोटा ठाठथी पोताना संघमा लइ गया. त्यां बने संघने आनंद थयो, पण पक्षनुं अभिमान होवाथी श्वेतांबरी पक्षे ते बताव्यु नहि, तेमां केटलाके दिगंबरी पक्ष स्वीकार्यो, पण केटलाके केवळ गर्वने लइने निषेध कर्यो अने गुजरातमां जइने तेओ वधीने प्रबळ थया. अस्तु आ प्रमाणे श्वेतांबरी पक्षनुं खंडन थयु, ए जोइने दिगंबरी संघे त्यां एक जिनमंदिर बंधावी तेनी प्रतिष्टा कुंदकुंद आचार्यने हाथे करावी. पछी ते संघ पोताना गुरु कुंदकुंद मुनि साथे पाछो वाळापुरीमां गयो. त्यां कुंदकुंदाचार्ये एक पट्टनी स्थापना करी, ते उपर एक विद्वान शिष्यनी योजना करी, अने पोते तत्वनुं अने अनुप्रेक्षानुं चिंतवन करवा काळ व्यतित करवा लाग्या.

एमना सर्व शिष्योमां उमास्वामी–जेमणे "तत्वार्थ सूत्र"

नामनो ग्रंथ रच्यो छे, ते मुख्य हता. तेमणे विद्वत्ताना बळथी पोतानी वयना फक्त १९ मा वर्षे कुंदकुंद आचार्य साथे वाद कर्यो, पण तेमा तेमनो पराजय थयो, पछी तेमणे कुंदकुंदाचार्यनुं शिष्यत्व स्विकार्युं, अने तेमनी पासे २९ मे वर्षे दीक्षा लइ अभ्यास कर्यो. तेज उमास्वामी गुरु कुंदकुंदाचार्यनी पश्चात् पट्टाधिकारी थया.

कुंदकुंदाचार्ये घणा अध्यात्म विषय पर ग्रंथ रच्या पैकी आज तेमांना अष्टपाहुड, पंचास्तिकाय, समयसार इत्यादि ग्रंथ उपलब्ध छे, ते केवळ अनेकांत स्याद्वाद मतना छे.

आ प्रमाणे चारेगम धर्म प्रसार करीने पोताना शिष्य उमास्वामीने पट्टपर स्थापी पोते अरण्यमा जइ घोर तप करवा लाग्या, अने वीरसंवत् ५८७ विक्रमसंवत् १०१ अने इ. स. ६३ मा श्रीमान कुंदकुंदमुनि ध्यानस्थ रही स्वर्गस्थ थया.

आ प्रमाणे इ. स पूर्वे सुमारे पांचसो वर्षनो जैननो घणोज संक्षिप्त इतिहास आटलोज मळी आव्यो छे.

समाप्त.

"दिगंबर जैन" ना ग्राहकोने अपायली भेटो.
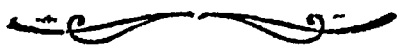
"दिगंबर जैन" पत्रना ग्राहकोने छेल्लां चार वर्ष दरम्यान नीचेनां पुस्तको नवीन प्रकट करी भेट तरीके मफत वेंचवामां आव्या हता.

वर्ष ३ जुं वीर संवत २४३६ नी बे भेटो—१ धर्मपरीक्षा (रु. १,). २ कळीयुगनी कुळदेवी ०) ०।।।.

वर्ष ४ थुं. वीर सं २४३७नी सात भेटो—१ सुकुमालचारित्र ०।≈. २ सुदर्शन शेठ ०।. ३ श्रुतपंचमी महात्म्य ०)≈ ४ श्रावक प्रतिक्रमण ०)-।।. ५ धर्मामृत रसायन. ६ कन्याविक्रयनो केर. ७ तमाकुना दुष्परीणामो. ०)-

वर्ष ५ मुं. वीर सं. २४३८ नी १० भेटो—१ मोक्षमार्ग प्रकाशक (हिंदी) रु. १।।।. २. जैन धर्मनी माहिती ०।. ३. इश्वरकर्ता खंडन ०)≈. ४. शीलसुंदरी रास ०)≈. ५. पचेंद्रीय संवाद ०)-।।. ६ सामायिक भाषा पाठ ०).- ७. कलीयुगकी कुलदेवी (हिंदी). ८. भट्टारक मीमांसा ०)≈. ९. प्राचीन दिगंबर–अर्वाचीन श्वेतांबर ०)≈. १०.पंच कल्याणक पाठ सार्थ ०)≈

वर्ष ६ ठुं. वीर सं. २४३९ नी १० भेटो–१. हनुमानचरित्र हिंदी ०।≈. २. मनोरमा गुजराती–हिंदी ०।।. ३. पुत्रीने